RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2021-23

पिघलता हिमालय

वर्ष 38 अंक 35 हल्द्वानी सम्वत् 2079 सोमवार 6 फरवरी 2023 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिय,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

मर्तोली नन्दा माई मन्दिर का संकल्प

ध्यैनी मिलन समारोह में जुटे, खिचड़ी भोज परम्परा सम्पन्न

कार्यालय प्रतिनिधि

हल्द्वानी। मर्तोलिया समाज द्वारा यहाँ ध्यैनी मिलन समारोह मनाते हुए हिमालयी नन्दादेवी माई के मन्दिर को 2013 तक भव्य स्वरूप देने का संकल्प लिया। इस अभियान में अभी तक हुए कार्य की विस्तार से जानकारी भी दी। साथ ही सभी से नन्दादेवी मन्दिर मर्तोली के पुनीत कार्य में जुटने का आह्वान किया।

पुरानी प्रथा के अनुसार चैत्र मास (मार्च अप्रैल) ममें गाँव से पिता, चाचा, भाई आदि अपनी चेली/बेटभ के घर जाकर भिटोली देते हैं। भिटोली में सक्कर पारा, घुघुती, बतासे, लड्डू मिष्ठानर, वस्त्र आदि व अपनी सामर्थ्य अनुसार राशि भी देते हैं। भिटोली मिलने पर चेली/बेटी खाद्य वस्तुओं को पूरे गाँव में वितरित करती है और बताती है कि मेरी भिटोली आई है। इस प्रकार माघ (जनवरी फरवरी) में गाँव में चेली/बेटभ को मायके बुला कर खिचड़ी भोज देने की परम्परा आज तक कायम है। चेली/बेटी को जोहारी शौका भाषा में 'ध्यैनी' शब्द से सम्बोधित किया जाता है।

इसी परम्परा को निभाते हुए समाज के सभी जाति-राठ के लोग अपनी श्रद्धानुसार जुटते हैं। इसी क्रम में हिमालयी माँ नन्दादेवी मन्दिर (मर्तोली) धार्मिक ट्रस्ट के प्रबन्धन में मर्तोलिया समाज के हल्द्वानी प्रवासियों द्वारा खिचड़ी भोज (ध्यैनी मिलन) समारोह वैदान्ता बैंकट हाल, कठघरिया में मनाया गया। चार सौ लोग इसमें भागीदारी बने जिसमें लगभग 130 ध्यैनियों ने प्रतिभाग किया। आयोजन के दौरान खेलकूद व सांस्कृतिक कार्यनम सम्पन्न हुए। समारोह संचाचन में गणेश सिंह मर्तोलिया, धाम सिंह मर्तोलिया, प्रेम सिंह मर्तोलिया, पुरमल सिंह मर्तोलिया, भूपाल सिंह मर्तोलिया, डॉ. प्रहलाद सिंह मर्तोलिया, ध्रुव सिंह मर्तोलिया, नरेन्द्र सिंह मर्तोलिया, मनोहर सिंह मर्तोलिया, सुन्दर सिंह मर्तोलिया, तेज सिंह मर्तोलिया, सुरेन्द्र सिंह मर्तोलिया, खुशाल सिंह मर्तोलिया आदि का विशेष सहयोग रहा। मंच संचालन गणेश सिंह मर्तोलिया, पुरमल सिंह मर्तोलिया, सुरेन्द्र सिंह मर्तोलिया द्वारा किया गया। प्रबन्ध न्यासी चन्द्र सिंह मर्तोलिया, पुरमल सिंह मर्तोलिया अध्यक्ष मन्दिर निर्माण तकनीकी समिति, प्रेम सिंह मर्तोलिया सचिव एवं गणेश सिंह मर्तोलिया से.नि.आईजी द्वारा मन्दिर निर्माण के अद्यतन की जानकारी दी एवं सभी से ट्रस्ट फण्ड में सहयोग की अपील की। आयोजन स्थल के लिये वेदान्ता के शिखर मर्तोलिया का भी आभार प्रकट किया गया।

दुम्मर के जर्जर विद्यालय भवनों का उद्धार होगा

अन्य जगह भी हालातों को जाँचना चाहिये

मुनस्यारी। सीमान्त क्षेत्र दुम्मर के दो विद्यालयी भवनों का उद्धार होने वाला है। इसी प्रकार अन्य विद्यालय भवनों के हालातों को भी जाँचना होगा, प्रदेश में कई जगह प्राथमिक, माध्यमिक, हाईस्कूल भवनों की हालत खस्ता है।

सीमान्त के दुम्मर स्थित पुराने राजकीय प्राथमिक विद्यालय और जूनियर हाईस्कूल की बात करें तो इसके भवन जर्जर हो चुके हैं। इनमे दरारें दिखाई दे रही हैं। जिससे विद्यालय में पढ़ने और पढ़ाने वाले दोनों के लिये खतरा है। इसके सुधार के लिये कई बार क्षेत्रवासियों ने आवाज भी उठाई। अब इन विद्यालयों के भवनों के उद्धार के लिये 70 लाख रुपये की राशि शासन से जारी हो चुकी है। खण्ड विकास कार्यालय के माध्यम से यह कार्य होना है। डीईओ प्राथमिक डी.सी. सती ने बताया है कि जर्जर हाल हो चुके प्राथमिक विद्यालय दुम्मर के लिये शासन ने 3380000 रुपये और जूनियर हाईस्कूल दुम्मर के लिये 3625000 लाख रुपये की राशि जारी की है। जिलाधिकारी रीना जोशी ने बीडीओ मुनस्यारी को एजेंसी नामित किया है। निर्माण कार्य की निगरानी एसएमसी के माध्यम से की जाएगी। भवन बनने के बाद बच्चों को सुविधा होगी।

दुम्मर के दो विद्यालयों के भवनों के हालात की तरह प्रदेश भर के कई विद्यालय भवनों के हालात खस्ता बने हुए हैं। निजी विद्यालयों के चलन से सरकारी विद्यालयों की ओर बच्चों का रुख कम होता जा रहा है, बावजूद ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी काफी संख्या में बच्चे इन विद्यालयों में जाते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में लगातार नवाचार पर कार्य हो रहे हैं और शासन भी घोषणाएं कर रहा है परन्तु पुराने भवनों के हालातों और संसाधनों की कमी से यह पिछड़ते रहे हैं। इसलिये जरूरी हो जाता है कि सरकारी स्कूलों की सेहत ठीक रखी जाए और इनमें रिक्त पद भरे जाएं। जिससे कि प्राइमरी से लेकर जूनियर हाईस्कूल तक के बच्चे अपने ग्राम के स्कूलों में बेहतर शिक्षा पा सकें। इसके अलावा हाईस्कूल, इण्टर कालेजों के स्थितियां भी सुधार होनी जरूरी हैं।

जोशीमठ आपदा प्रभावित विद्यर्थियों को नि:शुल्क उच्चशिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा देगा सीआईएमएस एवं यूआईएचएमटी ग्रुप ऑफ कालेज

देहरादून में स्थित सीआईएमएस और यूआईएचएमटी ग्रुप ऑफ कालेज ने अपने सामाजिक सरोकारों को आगे बढ़ाते हुए अपने सस्थान के शैक्षिक परिषद् की बैठक में जोशीमठ भूधंसाव प्रभावित छात्र-छात्राओं को नि:शुल्क उच्च शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा एवं चिकत्साशिक्षा प्रदान करने का फैसला लिया है। चमोली जनपद स्थित जोशीमठ क्षेत्र के युवाओं के लिए यह राहतभरी खबर है। संस्थान कोरोना काल में अनाथ हुए बच्चों व प्रदेश के आर्थिक रूप से कमजोर योग्य 300 छात्र-छात्राओं को प्रतिवर्ष नि:शुल्क उच्च शिक्षा प्रदान कर किया जायेगा, जिसका एमओयू भी संस्थान द्वारा निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा उत्तराखण्ड के साथ किया गया है ताकि ऐसे विद्यार्थियों को स्कूल स्तर से चिन्हित करने में आसानी हो। अब संस्थान ने जोशीमठ आपदा प्रभावित बच्चों के भविष्य की चिन्ता करते हुए उन्हें नि:शुल्क उच्च शिक्षा प्रदान करने का ऐलान किया है।

सीआईएमएस और यूआईएचएमटी ग्रुप ऑफ कालेज के चेयरमैन एडवोकेट ललित मोहन जोशी ने कहा कि जोशीमठ इस वक्त एक बड़ी विपदा से जूझ रहा है, भूधंसाव के कारण जोशीमठवासी अपने घरों को छोड़कर राहत शिविरों में रह रहे हैं जिससे उनके काम धान्धों के साथ उनके बच्चों की शिक्षा भी प्रभावित हुई है। इस विपदा की घड़ी में हमारा संस्थान जोशीमठ वासियों के साथ खड़ा है और आपदा प्रभावित किसी भी बच्चे की उच्च शिक्षा प्रभावित नहीं होने दी जाएगी।

सीआईएमएस और यूआईएचएमटी ग्रुप ऑफ कालेज न सिर्फ उच्च शिक्षा बल्कि सामाजिक सरोकारों में भी अग्रणी भूमिका निभाता रहा है। ग्रुप के चेयरमैन एडवोकेट ललित मोहन जोशी सजग ईंडिया के माध्यम से बीते 15 सालों से नशे के खिलाफ जन जागरूकता अभियान चला रहे हैं। संस्थान द्वारा जिन पाठ्यक्रमों में दिया नि:शुल्क प्रवेश दिया जायेगा वह इस प्रकार हैं- बीएससी मेडिकल माइक्रो-बायोलाजी, बी.एससी ऑप्टोमेट्री, बी.एससी. पैथोलॉजी, बीएससी रेडियोलॉजी, बीएससी फिजियोथेरेपी, बीएससी ऑपरेशन थियेटर टैक्नोलॉजी, बैचलर इन हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन, बीबीए, बीसीए, बी.लिब, एम.लिब, बी.एससी.आईटी, बीए (ऑनर), एमएसडब्ल्यू, बीए (टूरिज्म), मास कम्युनिकेशन, बी.कॉम (ऑनर्स), बीएचएम, डीएचएम, बीए, बी.कॉम, बी.एससी (पीसीएम/ जेडबीसी), मास्टर इन पब्लिक हेल्थ, मास्टर इन हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन, मास्टर इन होटल मैनेजमेंट, एम.एससी, बायोकैमिस्ट्री, एम.एससी. माइक्रोबायोलॉजी, एम.एससी. एमएलटी, पी.जी. योग विज्ञान डिप्लोमा, पी.जी. फिटनेस और खेल प्रबन्धन में डिप्लोमा, पी.जी. व्यापार लेखा और कराधान में डिप्लोमा, पी.जी. पत्रकारिता और जनसंचार में डिप्लोमा, पी.जी. जल स्वच्छता और स्वच्छता में डिप्लोमा।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

उम्मीदों का पर्व है 'बसन्त'

ऋतुराज बसन्त का स्वागत करें। यह उम्मीदों का पर्व है, यह खुशियों का अवसर है, यह उमंगित होने का समय है। ऐसे समय में जब सबकुछ मिश्रित होता जा रहा है, 'बसन्त' बताता है कि खिलना और बिखरना कितना जरूरी है। आपसी वैमन्सयता छोड़कर समय की धारा के साथ चलना जरूरी है।

समाज में बढ़ती जा रही होड़ ने आदम जाति को जितना जिद्दी बनाना शुरु कर दिया है, वह उसके लिये घातक है। अपनी मूल धारा को छोड़ समाज में बेतरतीब बिखरने को तैयार युवा पीढ़ी यह भूल रही है कि वह किस रास्ते पर चल रही है। दिखावे और बहलावे की दुनियादारी में बनावटी फूल सजाए जा सकते हैं लेकिन वह 'बसन्त' नहीं होगा। 'बसन्त' का अपना यौवन होता है, अपनी मस्ती होती है, अपनी उमंग-तरंग होती है, वह अपने समय पर खिलता और बिखतरा है। यही कारण है कि बसन्त का समय मनभावन होता है। प्रकृति की इस लीला से हमें सीख लेनी चाहिये।

हमारा वर्तमान घोर राजनीतिक घृणा, समाज में टकराव, अपासी राग-द्वेष से गुजर रहा है। साथ ही जोशीमठ जैसी आपदा ने चुनौतियां दी हैं। बार-बार आ रहे भूकम्प के झटकों ने इसे और भी भयभीत बना रखा है। समाज में पनपे भ्रष्टाचार, अत्याचार और प्रकृति के कोहराम में 'बसन्त' कैसे हो? यह सोचकर हार नहीं माननी चाहिये। आंखिर समाज की पहली इकाई परिवार है। इसकी शुरुआत परिवारों से होनी चाहिये। अपने बच्चों को टोकना ही होगा कि वह अनावश्यक न बहें, अनर्गल न करें, समय के पाबंद रहें। अक्सर देखा जा रहा है कि युवा पीढ़ी कहने-सुनने को तैयार नहीं है और उनकी हठधर्मिता में परिवार के मुखिया भी मौन हो जाते हैं। यही सब जाने अनजाने भटकाव बनता जा रहा है। इसमें 'बसन्त' छोड़ सबकुछ है। दिखने दिखाने को युवा पीढ़ी फर्राटेदार दिखाई दे रही है लेकिन इनमें लगी नशे की लत, दिखावे की लत उन्हें गलत रास्ते पर ले जाने वाली है। इसलिये इसी समय से प्रण करें कि अपने आप को यानी अपने परिवार को संभाल लें। परिवारों के संभलने पर समाज संभल जाएगा।

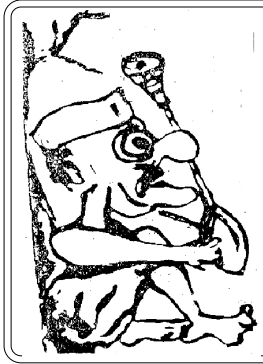

फसक

दाज्यू, सब अपनी-अपनी चाल चल रहे ठैरे

चुनाव का स्मरण कर बहुत कुछ होता रहता है बल

दाज्यू, अपने विशन दा को जब से धमकी मिली है, हमें डर लगने लगा है। विशन दा मामूली आदमी थोड़ा ही हुआ। डीडीहाट विधायक लगातार बनने का रिकार्ड है उनका। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष और कैबिनेट रैंक के मंत्री भी रहे हैं। धमकी देने वाले ने उन्हें गाजर मूली की तरह काट कर जान से मारने की धमकी दे डाली। विशन दा ने बताया कि 21 जनवरी को तहसील खूना गाँव से फोन आया। धमकी देने वाला आपराधिक प्रवृत्ति का है। दाज्यू, खून-खच्चर गन्दी बात ठैरी। गाँव-इलाके, नगर-जिला-प्रदेश-देश में कहीं भी ऐसा न हो, इसके लिये भगवान से प्रार्थना भी करते हैं।

दाज्यू, हम तो जोशीमठ के हालातों पर पहले से दु:खी हैं। अपना घनदा कांग्रेस की हाथ से हाथ जोड़ो यात्रा में जुट गया है। ब्वारी नगर पंचायत चुनाव के लिये दौड़ादौड़ कर रही है। बच्चे दिन भर 'कीरीम पाउडरा घिसनी किलै नै' गाकर नाच रहे हैं। जोगी और भैरु सटर-पटर में लगे हैं। चुनाव का स्मरण कर बहुत कुछ होता रहता है बल।

देश के संस्कृति मंत्रालय ने ऐतिहासिक स्मारकों को संभालने की बात कही है। दाज्यू, अपने गाँव के पास भी टीले में जोरदार चीज है, हम पहले से कह रहे हैं कोई संवार दे और संभाल ले। अच्छा हो जाए मंत्रालय इन्हें बचा ले। शासन ने बदरीनाथसे के विधायक राजेन्द्र भण्डारी की पत्नी रजनी भण्डारी को चमोली जिला पंचायत अध्यक्ष पद से हटा दिया। उन पर नन्दादेवी राजजात यात्रा कार्यों के टेण्डर में गड़बड़ी का आरोप है। विपक्ष कह रहा है कि विधायक और रजनी देवी जोशीमठ में पीड़ितों के साथ खड़े हैं इसलिये सरकार उन्हें बर्दाश्त नहीं कर रही है। दाज्यू, हमें तो बस इतना पता है कि एक ही समय में सबकुछ साथ-साथ हो रहा है। कौन गलत और कौन सही वह जाने। रामगढ़ में वक्फ बोर्ड की 28 एकड़ भूमि कब्जा कर उसकी खरीद-फरोख्त करने पर भवाली पुलिस ने पूर्व सांसद अकबर अहमद डम्पी समेत सात लोगों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। दाज्यू, आप जानने ही वाले ठैरे डम्पी यूपी के जमाने से ही उत्तराखण्ड में लगा ठैरा।

बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर धीरेन्द्र शास्त्री आजकल उत्तराखण्ड में हैं। दाज्यू, शास्त्री ज्यू की जै-जै हो रही ठैरी। हम भी देखने के लिये बागेश्वर गये। वह कह रहे हैं- 'हिमालय देखें और हिमालय जैसा बनें।'

-तुम्हारा भुली झकरुवा

परम्परागत जल सरंक्षण पद्धति नौलों-धारों को लानी होगी

हरीश चन्द्र अन्डोला

भारत के हिमालयी क्षेत्र में त्रिपुरा, मणिपुर, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, नागालैण्ड, असम, सिक्किम, उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश व जम्मू-कश्मीर जैसे राज्य शामिल हैं। हिमालयी क्षेत्र के निवासियों के पेयजल के पारम्परिक साधन मुख्यत: प्राकृतिक जलस्रोत होते हैं। अंग्रेजी शब्दकोष में इन जलस्रोतों का उल्लेख स्प्रिंग, नेचुरल स्प्रिंग या माउंटेन स्प्रिंग नाम से मिलता है। नौले उत्तराखण्ड में जल संरक्षण के विरासतीय और उत्कृष्ट शिल्पकला के अनमोल धरोहर हैं। पौराणिक काल से ही सभ्यताएं और जीवन जल स्रोतों के आसपास ही विकसित हुए हैं। हिमालयी क्षेत्र के गाँवों की आकारिकी का अध्ययन करने पर इस बात की जानकारी मिलती है कि गाँव बसने की प्रक्रिया में आवासीय भवन सर्वप्रथम इन्हीं जलस्रोतों के आसपास विकसित हुए। प्राकृतिक जलस्रोत उत्तराखण्ड में नौला तथा धारा अथवा मंगरा नाम से जाने जाते हैं। जम्मू-कश्मीर में इन्हें नाग या चश्मा और हिमाचल प्रदेश में बावड़ी या बौली नाम से पुकारा जाता है। सिक्किम में इस तरह के जलस्रोतों को धारा कहा जाता है। एक अनुमान के आधार पर समूचे भारतीय हिमालय क्षेत्र के साठ हजार गाँवों में तकरीबन पाँच लाख से अधिक जलस्रोत हैं। लगभग पाँच करोड़ की ग्रामीण जनसंख्या का साठ प्रतिशत हिस्सा इन जलस्रोतों का उपयोग पेयजल के लिए प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष तौर पर करता है। उत्तराखण्ड में इन नौलों धारों का ऐतिहासिक व सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यन्त महत्व है। यहाँ के कई नौले अत्यन्त प्राचीन हैं। इतिहासविदों के अनुसार उत्तराखण्ड के कुमाऊँ अँचल में स्थित अधिकांश नौलों-धारों का निर्माण मध्यकाल से अठारहवीं सदी के दौरान हुआ था। चम्पावत के समीप एक हथिया नौला, बालेश्वर का नौला, गणनाथ का उदिया नौला, पाटिया का स्यूनराकोट नौला तथा गंगोलीहाट का जाह्नवी नौला सहित कई अन्य नौले अपनी स्थाप्त्य कला के लिए आज भी प्रसिद्ध हैं। कहा जाता है कि कभी अल्मोड़ा नगर में एक समय 300 से अधिक नौले थे, जिनका उपयोग नगरवासियों द्वारा शुद्ध पेयजल के लिए किया जाता था। यहाँ के आसपास के कई गाँवों अथवा मुहल्लों का नामकरण भी नौलों धारों के नाम पर हुआ है, जैसे- पनुवानौला, चम्पानौला, तामानौली, रानीधारा, धारानौला आदि। जिन्होंने अपने आवश्यकताओं के अनुरूप जल संरक्षण के तौर तरीके अपनाए। ऐसे ही पानी को संचय करने की एक कारगर विधि है नौला, नौल या नवली। नाभि की तरह इसकी संरचना का होना इसे नौल नाम देती है। उत्तराखण्ड में गढ़वाली, कुमाउंनी व जौनसारी भाषा में नाभि को नौल कहा जाता है। पत्थरों को ज्यामिति तरीके से काटने के बाद नौले का निर्माण किया जाता है। जोकि क्रमश: सीढ़ी जैसी दिखाई देती हैं। जिसके बीच में खाली जगह रखी जाती है। जिससे यह नाभि जैसा दिखाई देता है। जमीन के अन्दर पानी के धीरे-धीरे रिसाव से यह नौले भरते हैं। साथ ही जल स्रोत का भी निर्माण करते हैं। यहाँ विशेषकर कुमाऊँ के राजाओं ने नौलों को सजाने, संवारने और संभालने के लिए अद्भुत कार्य किए हैं। कुमाऊँ का शायद ही कोई ऐसा गाँव हो जहाँ गाँव के साथ नौला न बना हो। यदि गाँव है तो नौला भी जरूर होगा। वहीं पौड़ी गढ़वाल के राठ क्षेत्र और चमोली के चांदपुर परगने में नौलों की परम्परा रही है। गाँवों में बनने वाले यह नौले गाँव के इष्ट देव के समान ही पूजनीय माने जाते रहे हैं। नौलों को बनाने में प्रयोग किये जाने वाले पत्थरों को तराश कर देवी देवताओं की आकृतियां बनाई जाती थी। पारंगत शिल्पकार ही इस कार्य को निपुणता से कर सकते थे। साथ ही नौले के अन्दर भगवान विष्णु की मूर्ति रखने का भी प्रचलन है। यही कारण भी है कि उत्तराखण्ड में तमाम मांगलिक कार्यों में नौलों को पूजने की परम्परा रही है। नौलों का नामकरण अधिकांश रूप से गाँव के देवताओं के नाम पर होता है या फिर नौला को बनाने वाले किसी विशेष व्यक्ति के नाम पर नौले का नाम रखा जाता है। जैसे बागेश्वर स्थित बद्रीनाथ का नौला सबसे प्राचीनतम नौलों में से एक माना जाता है।कत्यूरी और चंद राजाओं के शासनकाल में नौले हमारी जल संस्कृति के सबसे मजबूत स्तम्भ रहे हैं। चम्पावत का लगभग हजार वर्ष पुराना एक हथिया नौला शिल्प कला का एक बेजोड़ नमूना है। यह नौला कई सदियों बाद भी चम्पावत शहर को पानी पिलाने वाला आधार स्रोत है। जब आसपास के सभी नलों की टोंटियां हवा देने लगती हैं तो यह नौला चम्पावत की प्यास बुझाता है। ऐसी मान्यता है कि कभी अकेले अल्मोड़ा शहर में ही 360 नौला हुआ करते थे। लेकिन अब लगभग 24 नौले ही शहर में हैं। जिनमें से कुछ तो वर्षभर जिन्दा रहते हैं और और बाकी कुछ वर्ष के 8 से 9 महीने तक पानी देते हैं। वर्तमान में भूजल संरक्षण की अनेक विधियां हमारे पढ़े-लिखे समाज की ओर से दी जा रही हैं। लेकिन कहीं भूजल सूखने से बचा हो या उसका स्तर बढ़ा हो ऐसा सुनने में नहीं आता है। तब यह आधुनिक तकनीक भले ही कितनी कारगर हो पर जिस उद्देश्य से इनका इनका उपयोग हुआ है उनमें यह सफल होती नहीं दिख रही हैं। मौजूदा समय में सरकारों की ओर से जल संरक्षण की तमाम योजनाएं बनाई जाती हैं। विकास की अन्धी दौड़ और निर्माण कार्यों की फोटोग्राफी के दिखावे में मूल जल स्रोतों के साथ छेड़छाड़ कर के हौद, डिग्गी आदि का निर्माण किया जाता है। जिसका कुछ ही वर्षों में यह परिणाम निकलता है कि न तो हौद पानी से भरी होती है और न ही मूल स्रोत जिन्दा रह पाते हैं। ऐसे में परम्परागत ज्ञान से भूजल बचाने के लिए नौला पद्धति को सीखने के साथ ही जीवन्त रखने की बड़ी जरूरत है। जो पिछले कई दशकों से घनघोर उपेक्षित होने के बावजूद भी अपने अस्तित्व को बचाए रखे हुए हैं। नौले धारे सिर्फ जल स्रोत के माध्यम ही नहीं अपितु, हमारे जीवन मूल्यों को पोषित करती संस्कृति हैं यदि हम समय से न जागे तो वो ही खत्म हो जाएगी।

नौला फाउंडेशन सुदूर रिमोट गाँव के क्षेत्रीय लोगो का विकास एवं उनकी सहभागिता से जल संरक्षण के साथ साथ जैव विधतता को भी को बढ़ावा देने का हर सम्भव प्रयास कर रहा है। जिसके लिए फाउंडेशन क्षेत्र में विभिन्न सामाजिक समरसता एवं चिन्तन सम्वाद के जरिये गगास घाटी के लोगो के जीवन पर जलवायु परिवर्तन से होने वाले प्रभाव पर एक व्यापक नीति पर कार्य कर रहा हैं जिसका परिणाम जल्द ही सामने आने लगेगा। नौला फाउंडेशन ने सामुदायिक सहभागिता से गगास घाटी के सुन्दर गाँव थामण में एक पूरी तरह से सूख चुके नौले को पारम्परिक जल सरंक्षण पद्धति को अपनाकर पुनर्जीवित करने में सफलता पायी हैं। फाउंडेशन की असली चुनौती अल्मोड़ा शहर के पूरी तरह से प्रदूषित हो चुके भूजल व नौले धारों के पानी को शुद्ध करने के लिए तैयार होना पड़ेगा तभी असली परीक्षा होगी। पर्यावरणीय व सांस्कृतिक धरोहर की दृष्टि से इन नौलों व धारों का खत्म होना हम सब के लिए एक बहुत बड़ा सवाल है। इस जल संचयन परम्परा को पुनर्जीवित करने हेतु गाँव समाज की पहल पर चौड़ी पत्ती के पौधों का रोपण व चाल-खाल निर्माण को प्राथमिकता दी जाय। सरकारी स्तर पर समुचित नीति निर्धारिण के साथ समाजोन्मुखी विकास को केन्द्र में रखकर जल-संरक्षण की ऐसी दीर्घकालिक योजनाओं का क्रियान्वयन किया जाए, जिसमें ग्रामीण व स्थानीय आम लोगों की प्रत्यक्ष भागीदारी सुनिश्चित हो। इस तरह पर्यावरण का सतत विकास व सांस्कृतिक विरासत के तौर पर हिमालय की यह पुरातन परम्परा समृद्धता की ओर बढ़ेगी।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

नवीन जोशी के उपन्यास पर चर्चा- १

देवभूमि डिवेलपर्ड : विकास की गति धीमी करने की अनुसंसा करता है

डॉ.प्रयाग जोशी

शराब नहीं रोजगार दो। उसके माफियाओ के द्वारा की गई उमेश डोभाल की हत्या काण्ड की ईमानदारी से जाँच कराओ और दोषियों पर मुकदमा चलाओ। अपराधियों को न्यायालयों से दण्डित कराओ। हिमालय जैसे नाजुक पहाड़ पर टिहरी के जैसे विशाल बांधों की योजनाएं बन्द करो। वनों की सुरक्षा के लिए 'चिपको' जैसा आन्दोलन चलाने वाले पहाड़ के लोगों की अनसुनी मत करो। उनके जल, जंगल और जमीनों की बदहाली मत कर दो। यातायात की सुविधा बढ़ाने नाम पर मशीनों से चट्टानों को तोड़ने और भीतर भीतर सुरंगें बनाने की योजनाओं की सीमा तय करे। इस तरह के दर्जन भर से भी अधिक आन्दोलनों के सिलसिलों से जुड़ा, (देश के) अन्य पिछड़ी जातियों के लिये नौकरियों में सत्ताइस प्रतिशत आरक्षण के विरुद्ध शुरु हुआ आन्दोलन।

बारहों भाँति के बीजों से अंकुरित दालों खेत जैसे कि जंगली घासों से भर गए हों, उसी भाँति पहाड़ के हिस्से को उत्तर प्रदेश से पृथक कर 'उत्तराखण्ड' नाम के राज्य के शीघ्रातिशीघ्र गठन करने की मांग उठी थी। उसके गठन की ना-नुकर, हाँ-हाँजी कई वर्ष और लम्बी खिंचती कि डेढ़-दर्जन के करीब नौ जवानों ने अपने जान की बलि चढ़ा दी।

उक्त आन्दोलन और 'उत्तरांचल' नाम से गठित कर दिए गए राज्य की लगातार खबर लेते रहे नवीन जोशी की किताब 'देवभूमि डेवलपर्स' कुछ ही महीनों पहले प्रकाशित हुई है। सहस्राब्धी वर्ष से पहले के आन्दोलन पर उनकी कृति 'दावानल' प्रकाशित हुई थी। राज्य गठित हो जाने के बाद की हालातों पर केन्द्रित होने से प्रस्तुत कृति को उसी का दूसरा भाग माना जा सकता है। ये दोनों ही औपन्यासिक कृतियाँ हैं। दूसरे शब्दों में इनको दावानलों की ज्वालाओं से निकले देवभूमि के निरन्तर अद्यतन होते जा रहे व्यावसायिक परिणतियों की त्रासद पटकथा के रूप में भी देख सकते हैं। यह ऐसी पटकथा जो उसके भौगोलिक ही नहीं सांस्कृतिक खतरों की चेतावनी भी दे रही है।

शराब के विरुद्ध उत्तराखण्ड वासियों का व्यवस्था के साथ चलने वाला दीर्घ कालीन शीतयुद्ध अब सीजफायर हो चुका है। दोनों दलों ने मान लिया है कि वह देवलोक की प्रजातंत्री सरकारों और प्रजावर्ग के तरक्कीपसन्द माननीयों की कमाई का मजबूत जरिया बना रहेगा। इस अनुबन्ध के चलते जलक्रीड़ा को सनातन रूप दिया जाएगा। इस मसौदे का लिखित 'रागदरबारी' भी इस कृति में है। दो टूक शब्दों में कहा जा सकता है कि यह उपन्यास विगताख्यान तो है ही, उत्तराखण्ड के भावी इतिहास लेखन के लिए दस्तावेज और वहाँ के लोक जीवन की स-शब्दचित्र एक रोचक गाथा-व्यथा भी है।

देवभूमि नामक एक सांस्कृतिक शब्द का अपकर्ष, पर्यटन के अर्थ में किस तरह व्यावसायिक होता गया उसका शाब्दिक प्रत्यक्षीकरण तो किताब कराती रही है, वहाँ जाकर देखने की पर्युत्सुकता भी बढ़ाती है। खासकर उन स्थानों को जहाँ लोक जीवन की मौलिक यथार्थता तथा कथित विकासवाद की विडम्बनाओं के बावजूद अभी भी बची हुई है।

क्रमशः

विचार

गंगा विलास नहीं, नदी तीर्थ : तीर्थ गाँव

अरुण तिवारी

दिलचस्प है कि हमारा घूमना-घुमाना, आज दुनिया के देशों को सबसे अधिक विदेशी मुद्रा कमाकर देने वाला उद्योग बन गया है। विश्व आर्थिक फोरम का निष्कर्ष है कि भारतीय पर्यटन उद्योग में भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 25 फीसदी तक योगदान करने की क्षमता है, वह भी गाँवों के भरोसे। कोरम मानता है कि भारत के गाँव विरासत, संस्कृति और अनुभवों के ऐसे महासागर है, जिन तक पर्यटकों की पहुँच अभी शेष है। गाँव आधारित प्रभावी पर्यटन को गति देकर, भारत वर्ष 2027 तक प्रति वर्ष 150 लाख अतिरिक्त पर्यटकों को आकर्षित करने की क्षमता हासिल कर सकता है। इस तरह वह 25 अरब अमेरिकी डॉलर की अतिरिक्त विदेशी मुद्रा अर्जित कर सकता है। इसके लिए भारत को अपने 60 हजार गाँवों में कम से कम एक लाख उद्यमों को गतिशीलता प्रदान करनी होगी। यह भारत में ग्रामीण पर्यटन के विकास की पूर्णतया वाणिज्यिक दृष्टि है। भारतीय दृष्टि भिन्न है।

भ्रमण की भारतीय दृष्टि-

भ्रमण तो कई जीव करते हैं, किन्तु मानव ने अपने भ्रमण का उपयोग अपने अन्तर्मन और अपने बाह्य जगत का विकास के लिए किया। बाह्य जगत का विकास यानी सभ्यता का विकास और अन्तर्मन का विकास यानी सांस्कृतिक विकास। इसीलिए मानव अन्य जीवों की तुलना में, अधिक जिज्ञासु, अधिक सांस्कृतिक, अधिक हुनरमंद और अधिक विचारवान हो सकाय अपनी रचनाओं का विशाल संसार गढ़ सका। स्पष्ट है कि भ्रमण, मनुष्य के लिए मूल रूप से सभ्यता और संस्कृति.. दोनों को पुष्ट करने का माध्यम रहा है। भ्रमण की भारतीय ख्रष्टि का मूल यही है। इसी ख्रष्टि को सामने रखकर भारतीय मनीषियों ने भिन्न उद्देश्यों के आधाार पर भ्रमण को पर्यटन, तीर्थाटन और देशाटन के रूप में वर्गीकृत किया है और तीनों को अलग-अलग वर्गों के लिए सीमित किया है। भ्रमण के इस वर्गीकरण तथा दृष्टि को यदि हम बचाकर रख सकें तो बेहतर होगा। वरना हमारे गाँवों के भ्रमण में जैसे ही पूर्णतया नई वाणिज्यिक दृष्टि का प्रवेश होगा, हमारा भ्रमण तात्कालिक आर्थिक लाभ का माध्यम तो बन जाएगा, किन्तु भारतीय गाँवों को लम्बे समय तक गाँवों के रूप-स्वरूप में बचा रखना असम्भव हो जायेगा। भारतीय गाँवों के बचे-खुचे रूप-स्वरूप के पूरी तरह लोप का मतलब होगा, भारत की सांस्कृतिक इकाइयों का लोप हो जाना। सोचिए कि क्या यह उचित होगा?

तीर्थ भाव से हो ग्राम्य पर्यटन का विकास हमें नहीं भूलना चाहिए कि भारत के गाँव महज सामाजिक इकाइयाँ न होकर, पूर्णतया सांस्कृतिक इकाइयां हैं। हमारे गाँवों की बुनियाद सुविधा नहीं, रिश्तों की नींव पर रखी गई है। भारतीय गाँवों में मौजूद कला, शिल्प, मेले, पर्व आदि कोई उद्यम नहीं, बल्कि एक जीवन शैली हैं। बहुमत भारत आज भी गाँवों में ही बसता है। इसीलिए आज भी कहा जाता है कि यदि भारत को जानना हो तो भारत के गाँवों को जानना चाहिए। रिश्ते-नाते, संस्कृति, विरासत और अपनी प्राकृतिक धरोहरों को संजोकर रखने के कारण भारत के 60 हजार गाँव अभी भी तीर्थ ही हैं। तीर्थाटन-तीर्थयात्रियों से सादगी, संयम, श्रद्धा और अनुशासन की मांग करता है। तीर्थयात्री से लोभ-लालच, छल-कपट की अपेक्षा नहीं की जाती। भारतीय गाँवों में पर्यटन और पर्यटकों के रुझान का विकास इसी भाव और अपेक्षा के साथ करना चाहिए। नदियां, इस भाव को पुष्ट करने का सर्वाधिक सुलभ, सुगम्य और प्रेरक माध्यम हैं और आगे भी बनी रह सकती हैं। क्यों? क्योंकि भारत की नदियां आज भी अपनी यात्रा की ज्यादातर दूरी ग्रामीण इलाकों से गुजरते हुए तय करती हैं। क्योंकि नदियां आज भी भारतीय संस्कृति व सभ्यता की सर्वप्रिय प्रवाह हैं।?

नदी पर सवार संभावना-

गौर कीजिए कि भारत, नदियों का देश है। सिंधु, झेलम, चेनाब, रावी, सतलुज, ब्यास, मेघना, गंगा, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, नर्मदा, ब्रह्मपुत्र, तुंगभद्रा, वैगई, महानदी, पेन्नर, पेरियार, कूवम, अडयार, माण्डवी, मूसी, मीठी, माही, वेदवती और सुवर्णमुखी...गिनती गिनते जाइए, कि भारत में नदियां ही नदियां हैं। मरुभूमि होने के बावजूद, राजस्थान 50 से अधिक नदियों का प्रदेश है। राजस्थान के चुरु और बीकानेर को छोड़कर, भारत में शायद ही कोई जिला ऐसा हो, जहाँ नदी न हो। भारत के हर प्रखण्ड के रिकार्ड में आपको कोई न कोई छोटी-बड़ी नदी लिखी मिल जायेगी। भारत में शायद ही कोई गांव हो, जिसका किसी न किसी नदी से सांस्कृतिक रिश्ता न हो। मुण्डन से लेकर मृत्यु तकय स्नान से लेकर पूजन, पान, दान तकय पर्व, परिक्रमा से लेकर मेले तक, सन्यास, शिष्यत्व से लेकर कल्पवास तकय सभी कुछ नदी के किनारे। हर नदी के अपने कथानक हैं, गीत-संगीत हैं, लोकोत्सव हैं। भैया दूज, गंगा दशहरा, छठ पूजा, मकर सक्रान्ति पूरी तरह नदी पर्व हैं। गंगा के किनारे वर्ष में 21 बार स्नान पर्व होता है। गंगा, शिप्रा और गोदावरी के किनारे लगने वाले कुम्भ में बिना बुलाए करोड़ों जुटते आपने देखे ही होंगे। 14 देवताओं को सैयद नदी में स्नान कराने के कारण खारची पूजा (त्रिपुरा) तथा मूर्ति विसर्जन के कारण गणेश चतुर्थी, दूर्गा पूजा, विश्वकर्मा पूजा आदि पर्वों का नदियों से रिश्ता है। नदियां योग, ध्यान, तप, पूजन, चिन्तन, मनन और आनन्द की अनुभूति की केन्द्र हैं ही। नदी में डुबकी लगाते, राफ्टिंग-नौका विहार करते, मछलियों को अठखेलियां लेते हुए घण्टों निहारते हमें जो अनुभूति होती है, वह एक ऐसा सहायक कारक है, जो किसी को भी नदियों की ओर आकर्षित करने के लिए पर्याप्त है। किन्तु इस पूरे आकर्षण को नदी, गाँव और नगर के बीच के सम्मानजनक रिश्ते की पर्यटक गतिविधि के रूप में विकसित करने के लिए कुछ कदम उठाने जरूरी होंगे।

जरूरी कदम-

1. नदी केन्द्रित ग्राम्य पर्यटन को विकसित करने के लिए नदियों को अविरल-निर्मल तथा गाँवों को स्वच्छ-सुन्दर बनाना सबसे पहली जरूरत होगी। एशिया का सबसे स्वच्छ गाँव का दर्जा प्राप्त होने के कारण ही मेघालय का गाँव मावलिन्नांग, आज पर्यटन का नया केन्द्र बन गया है।

2. नदी-ग्राम्य पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए नदियों को उनकी विशेषताओं के साथ प्रस्तुत करना शुरू करना होगा। जैसे सबसे छोटा आबाद नदी द्वीप- उमानंद, भारत का सबसे पहला नदी द्वीप जिला- माजुली, स्वच्छ नदी- चम्बल, भारत का सबसे वेगवान प्रवाह - ब्रह्मपुत्र, सबसे पवित्र प्रवाह- गंगा, एक ऐसी नदी जिसकी परिक्रमा की जाती है- नर्मदा, ऐसी नदी घाटी जिसके नाम पर सभ्यता का नाम पड़ा- सिन्धु नदी घाटी, नदियां जिन्हे स्थानीय समुदायों ने पुनर्जीवित किया- अरवरी, कालीबेंई, गाड गंगा।

3. सच पूछो तो भारत की प्रत्येक नदी की अपनी भू-सांस्कृतिक विविधता, भूमिका और उससे जुड़े लोक कथानक, आयोजन व उत्सव हैं। नुक्कड़ नाटक, नृत्य-नाट्य प्रस्तुति, नदी सम्वाद, नदी यात्राओं आदि के जरिए आगुन्तकों को इन सभी से परिचित कराना चाहिए। गंगा, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, कावेरी, गोदावरी, नर्मदा.. छह मुख्य नदियों को लेकर इंन्दरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने यह शुरुआत की है। इससे न सिर्फ नदियों के प्रति चेतना, जन-जुड़ाव व दायित्वबोध बढ़ेगा, बल्कि नदी आधारित ग्रामीण पर्यटन को अधिक रुचिकर बनाने में भी मदद मिलेगी।

4. नदी पर्यटन का वास्तविक लाभ गाँवों को तभी मिलेगा, जब नदी पर्वों-मेलों के नियोजन, संचालन और प्रबन्धन में स्थानीय ग्रामीण समुदाय की सह-भागिता बढ़े। इसके लिए स्थानीय गाँववासियों को जिम्मेदार भूमिका में आने के लिए प्रेरित, प्रशिक्षित और प्रोत्साहित करना जरूरी होगा।

5. केरल ने ग्राम्य जीवन के अनुभवों से रुबरु कराने को अपनी पर्यटन गतिविधियों से जोड़ा है। नदी आयोजनों को भी स्थानीय ग्राम्य अनुभवों, कलाओं, आस्थाओं आदि से रुबरु कराने वाली गतिविधियों से जोड़ा जाना चाहिए। स्थानीय खेल-कूद, लोकोत्सव तथा परम्परागत कला- कारीगरी-हुनर प्रतियोगिताओं के आयोजन तथा ग्रामीण खेत-खलिहानों, घरों के भ्रमण, इसमें सहायक होंगे।

6. उत्तर प्रदेश के जिला गाजीपुर में गंगा किनारे स्थित गाँव गहमर, एशिया का सबसे बड़ा गाँव भी है और फौजियों का मशहूर गाँव भी। फौज में भर्ती होना, यहाँ एक परम्परा जैसा है। नदियों किनारे बसे अनेकानेक गाँव ऐसी अनेकानेक खासियत करते हैं। नदी किनारे के ऐसे गांवों की खूबियों से लोगों को रुबरु होना, क्या अपने आप में एक दिलचस्प अनुभव नहीं होगा? नदी-गाँव पर्यटन विकास की दृष्टि से क्या यह एक आकर्षक पर्यटन विषय नहीं हो सकता? इसे नदी-गाँव यात्रा के रूप में अंजाम दिया जा सकता है।

7. भारत की अनेकानेक हस्तियों, विधओं का जन्म गाँवों में ही हुआ है। माउंट एवरेस्ट फतेह करने वाली प्रथम भारतीय पर्वतारोही बछेन्द्रीपाल का गाँव नाकुरी, मिसाइलमैन अब्दुल कलाम का गाँव रामेश्वरम, तुलसी-कबीर-रहीम- प्रेमचंद के गाँव, कलारीपयट्टू युद्धकला का गाँव, पहलवानों का गाँव, प्राकृतिक खेती का

शेष पृष्ठ 5 पर

ज्योतिष की बातें - 114

7 फरवरी 2023 को बुध मकर राशि में प्रवेश करेगा जो कि शनि की राशि है। इस समय बुध प्रायः शुभ फलदायक रहेगा। बुध बुद्धि, स्मरण शक्ति, व्यापार-वाणिज्य, गणित, लेखनकार्य, वाणी, संचार साधन, पत्र व्यवहार तथा मामा आदि का कारक होता है। बुध एक सौम्य ग्रह है इसलिए बुध के अशुभ फल उतने तीव्र एवं कठोर नहीं होते हैं जितने की शनि, मंगल, राहु एवं केतु के होते हैं। अगले 20 दिन धनु, तुला, सिंह, मिथुन, मेष व मीन राशियों के लिए बुध शुभ फलदायक रहेगा। शेष राशियों के लिए सामान्य फल समझना चाहिए ।

यह गोचर फल नितान्त स्थूल होता है। व्यक्ति विशेष की राशि का सूक्ष्म विश्लेषण उसकी जन्मकुण्डली, महादशा आदि पर निर्भर होता है ।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

औली में विंटर गेम्स करवाने की तैयारियां

चमोली। जोशीमठ की आपदा के बाद औली में विंटर गेम्स होंगे या नहीं को लेकर सरकार की चुप्पी टूटी है। पर्यटन मंत्री सतपाल महाराज का कहना है कि औली पूरी तरह सुरक्षित है, लिहाजा खेल होंगे।

शीतकाल में औली के कारण गुलजार रहने वाले जोशीमठ में इस बार वीरानी है। चारों ओर परेशानियों का मंजर और पीड़ितों की आफत। इन सबके बीच सरकार ने औली में शीतकालीन खेल करवाने की घोषणा की है। मानना है कि इससे वीरानी दूर होगी और नई उमंग के साथ लोग जुटेंगे।

पर्यटन मंत्री ने ऐलान किया है कि हर हाल में शीतकालीन खेल करवाए जाएंगे। साथ ही स्थानीय युवाओं ने भी सुरक्षित औली का सन्देश देने के लिये स्कीइंग प्रशिक्षण शुरु कर दिया है। कहा है कि पर्यटन व्यवसाय से जुड़े लोगों की यही आशा है। यहाँ बर्फवारी के दौरान पर्यटक उमड़ते हैं। इस बार जोशीमठ में भू-धंसाव के कारण पर्यटकों में कमी है, जिससे स्थानीय लोगों में संकट दोहरा हो सकता है। यही देखते हुए पर्यटन विभाग ने पर्यटन व्यवसाय से जुड़े लोगों को लाभ देने के लिये प्रयास शुरु कर दिये हैं।

पर्यटन मंत्री महाराज ने पत्रकार वार्ता में कहा कि पर्यटन विभाग औली में शीतकालीन खेल कराने को लेकर तैयार है। इस सम्बन्ध में अधिकारियों को व्यवस्था बनाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक आपदा से जोशीमठ जरूर प्रभावित है लेकिन इस कारण से अन्य गतिविधियां नहीं रोकी जा सकती क्योंकि स्थानीय बेरोजगारों का यही साधन है। ऐसे में साल भर में एक बार आने वाले इस सीजन में पर्यटन कारोबारियों को पूरी मदद की जाएगी।

पर्यटन मंत्री सतपाल महाराज का कहना है औली पूरी तरह सुरक्षित है, लिहाजा खेल होंगे

रेलवे भूमि अतिक्रमण को लेकर प्रशासन फिर जुटा

हल्द्वानी। बनभूलपुरा क्षेत्र में रेलवे भूमि को लेकर प्रशसन फिर से जुटा हुआ है। दरअसल सुप्रीमकोर्ट के निर्देश के बाद सारी स्थितियां स्पष्ट होनी हैं और कभी न कभी अतिक्रमण तो हटना तय है। ऐसे में प्रशासन ने जन प्रतिनिधियों के साथ बैठक कर सहयोग की अपील की है।

जिलाधिकारी धीराज गर्ब्याल ने कैम्प कार्यालय में बैठक करते हुए स्थानीय नेताओं को सुना और उनके द्वारा प्रस्तुत प्रपत्रों को देख कहा कि इसका मिलान किया जायेगा। कौन सी भूमि अतिक्रमण हो चुकी है और किस भूमि पर दावा किया जा रहा है, इसको पुराने अभिलेखों के साथ मिलान कर देखा जाएगा। असल में क्षेत्रवासियों सहित हाजी अब्दुल मलिक ने पुराने नक्शे प्रस्तुत करते हुए दावा किया कि 1935 से 1942 के बीच गौला नदी में बाढ़ आई थी। बाढ़ में रेलवे ट्रैक बह गया था। यह रेलवे ट्रैक गौला नदी के बीच में था। उस समय उन्हें ट्रैक बनोन का ठेका मिला था। उसमें 5 करोड़ का खर्च आ रहा था। रेलवे ने पैसा नहीं दिया और ट्रैक को शिफ्ट कर दिया। बैठक में अब्दुल मतीन सिद्दकी, उवैश राजा सहित कई जनप्रतिनिधियों ने पट्टों, फ्रीहोल्ड, लीज के पेपर प्रस्तुत किये और दावा किया कि बागवानी के लिये जमीन लीज पर मिली थी। यह भी बताया कि नगर निगम के अभिलेखों में यह जमीन नजूल में दर्ज है। प्रशासन ने सबकुछ सुनने के बाद कहा कि प्रभावितों को विश्वास में लेकर सीमांकन किया जा रहा है, जिसमें सभी सहयोग करें।

इस समय सबकी निगाह बनभूलपुरा क्षेत्र में है कि पुराने अभिलेखों के दावे और अतिक्रमण के कारनामों के बीच किस प्रकार का तालमेल होगा। सवाल है कि गड़बड़ कैसे हुई, किसके द्वारा की गई और अब क्या कार्रवाई हो सकती है।

बनभूलपुरा क्षेत्र में रेलवे भूमि को लेकर प्रशासन ने जन प्रतिनिधियों के साथ बातचीज की

जोशीमठ भू-धंसाव के कारण गहरी दरारें डरावनी हैं, हाईवे का नक्शा ही बदल सकता है

जोशीमठ नगर में हो रहे भू-धंसाव से बहुत बुरी स्थिति है। इलाके में गहरी दरारें डरावनी हैं और आने वाले समय में हाईवे का नक्शा ही बदल सकता है। प्रकृति के इस खेल में बहुत कुछ बदल चुका है। बीआरओ ने सुरक्षा की दृष्टि से हाईवे को कवर कर लिया है ताकि वाहन दीवार के नीचे से न गुजरें। ऋषिकेश बदरीनाथ हाईवे भी तरह प्रभावित है। हर आधे किलोमीटर पर हाईवे धंसा होने के कारण इसे सुधार का कार्य भी बहुत कठिन है। हालांकि बीआरओ दरारें भरने में लगा है लेकिन हाईवे का नक्शा बदलता जा रहा है।

बताते चलें कि बदरीनाथ राष्ट्रीय राजमार्ग सामरिक दृष्टि के साथ बदरीनाथ, हेमकुण्ड साहिब और फूलों की घाटी को जोड़ने वाला महत्वपूर्ण मार्ग है। यही हाईवे जोशीमठन से मारवाड़ी पुल तक 6 किमी के क्षेत्र में बुरी तरह धंसता जा रहा है। जेपी कम्पनी के समीप हाईवे कई जगह धंसा हुआ है। आगामी यात्रा सीजन को देखते हुए बीआरओ कार्य पर जुटा है लेकिन आने वाले दिनों में हाईवे की स्थिति क्या होगी यह बाद में ही पता चल सकेगा। बीआरओ कमाण्डर कर्नल मनीष कपिल ने बताया है कि बदरीनाथ हाईवे की भारी नुकसान पहुँचा है लेकिन अभी तक इसका आंकलन नहीं किया है। जोशीमठ-परसारी और नृसिंह मन्दिर रोड पर भी जगह-जगह दरारें आने से सड़क का बड़ा हिस्सा ध स चुका है। सीएचसी से लेकर पेट्रोल पम्प तक कई जगहों पर सड़क धंसी हुई है। सिंहधार क्षेत्र में भी सड़क में दरारें हैं। ऐसे में वाहनों का आवागमन बेहद खतरनाक है। आगामी यात्रा सीजन तक पूरे जोशीमठ क्षेत्र के हालात क्या होंगे बहुत कठिन है। पीड़ित लोग वर्तमान और आगे की सोच में दुःखी हैं।

परिक्रमा

हेलंग बाईपास पर जनता सड़कों पर उतरी है

जोशीमठ/चमोली। भू-धंसाव से प्रभावित जोशीमठ व इसके आसपास गाँवों के लोगों ने हेलंग-मारवाड़ी बाईपास व एनटीपीसी परियोजना का विरोध तेज कर दिया है। रैली प्रदर्शन में कर लोगों ने चेतावनी दी है कि यदि सरकार नहीं मानती है तो उग्र आन्दोलन होगा। दूसरी ओर प्रदेश सरकार ने कहा है कि सामरिक दृष्टि से यह बाईपास बनना बेहद जरूरी है। कुछ लोग आशंकाएं जताकर इसका विरोध कर रहे हैं, इस बारे में विचार करना चाहिये।

सचिव आपदा प्रबन्धन रंजीत सिन्हा का कहना है कि कुछ लोगों को आशंका है कि हेलंग बाईपास का निर्माण जारी रहा तो जोशीमठ में ऊपरी हिस्से की जमीन और धंस सकती है। कुछ की आशंका है कि इससे उनका रोजगार प्रभावित होगा। जबकि यह मार्ग सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। आमजन की उपयोगिता के हिसाब से देखें तो इससे समय और ईधन, दोनों की बचत होगी।

बाईपास का विरोध प्रदर्शन कर रहे लोगों ने आक्रोश रैली निकालते हुए निर्माण का निर्माण बन्द करो, एनटीपीसी वापस जाओ, प्रभावितों को उचित मुआवजा दो के नारे लगाए। जोशीमठ बचाओ संघर्ष समिति के संयोजक अतुल सती का कहना है कि सभी लोगों की राय है कि जोशीमठ की बरबादी के लिये एनटीपीसी की तपोवन विष्णुगाड़ जलविद्युत परियोजना जिम्मेदार है। इसे तुरन्त बन्द किया जाना चाहिये।

इस बीच चारधाम ऑलवेदर रोड परियोजना के तहत निर्माणाधीन हेलंग मारवाड़ी बाईपास को जल्द बनाने की तैयारी में एक कमेटी बनाई है जो इसकी रिपोर्ट के अनुसार कार्य आगे बढ़ेगा। कमेटी में भा.रा.राममार्ग प्राधिकरण, आई आइटी रुडकी और टीएचडीसी संस्था शामिल हैं।

चारधाम ऑलवेदर रोड परियोजना के तहत निर्माणाधीन हेलंग-मारवाड़ी बाईपास के लिये कमेटी

रामनगर : लोकगाथाओं पर आधारित नाट्य मंचन

रामनगर। प्रगतिशील सांस्कृतिक पर्वतीय समिति पैठपड़ज्ञव का बसन्त उत्सव धूम धाम के साथ मनाया गया। हर वर्ष की भाँति इस बार भी आयोजन को लेकर समिति ने तैयारी की थी जिसमें लोक गाथाओं पर आधारित नाट्य मंचनों की प्रस्तुति हुई।

सांस्कृतिक जुलूस के साथ बसन्तोत्सव का शुभारम्भ किया गया। गोपालदत्त ने बतौर मुख्य अतिथि कार्यक्रम का श्रीगणेश किया। सांस्कृतिक जुलूस में विभिन्न अंचलों से आए कलाकारों व स्थानीय लोगों ने अपनी संस्कृति का प्रदर्शन किया। इसमें अंगवाल देहरादून, मनसा देवी स्वयं सहायता समूह, प्रयोगांग नैनीताल, महिला एकता मंच कर्णभूमि कर्णप्रयाग, ग्रेट मिशन स्कूल हिम्मतपुर, मनसार लोक मंच कोटद्वार, माँ दुर्गा कला मंच दुर्गापुरी, उर्गम घाटी जोशीमठ, आर नन्दा रामनगर, जीआईसी रामनगर, पर्वतीय ग्राम विकास समिति रामनगर, शाइनिंग स्टार स्कूल हाथीडगर, जय मोहन इण्टर कालेज कानिया, दून पब्लिक स्कूल गैबुआ, रामनगर सांस्कृतिक कला मंच, सेंट जोंस स्कूल विद्या मन्दिर छोई के कलाकारों ने झांकी प्रतियोगिता में भाग लिया। टीमों ने ताड़केश्वर महादेव पर झांकी, नन्दा सुनन्दा डोली, कुमाउंनी होली, छोलिया नृत्य की प्रस्तुति दी।

प्रतियोगिता के निर्णायक मणी भारती, ब्रजमोहन जोशी, घनश्याम भट्ट थे। कार्यक्रम में गिरीश मठपाल, दीप जोशी, भूपेन्द्र खाती, चन्दन कोटवाल, नवीन करगेती, कमल बेलवाल, रोहित गोस्वामी, गणेश पन्त, किशन डसीला, तरुण जोशी, विनीत रिखाड़ी, मानवेन्द्र कालाकोटी, मनोज पपनै ने झांकियों का स्वागत किया।

उल्लेखनीय है कि रामनगर में बसन्त के अवसर पर प्रतिवर्ष नाट्य मंचन की प्रतियोगिता को जिस उत्साह के साथ मनाए जाने की परम्परा बन चुकी है उससे नाट्य दलों का भी उत्साहबर्द्धन होता है और लोकगाथाओं की जानकारी लोगों को मिलती है।

प्रगतिशील सांस्कृतिक पर्वतीय समिति पैठपड़ाव का बसन्त उत्सव धूमधाम से मनाया

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

गंगा विलास नहीं.....

पृष्ठ 3 का शेष

गाँव, मुकदमामुक्त-सद्भावयुक्त गाँव आदि आदि। ऐसी खूबियों वाले गाँवों की लड़ियाँ बनाकर ग्राम्य पर्यटन विकास के प्रयास भी गाँव-देश का हित ही करेंगे। अतुल्य भारत- विचार पर काम हुआ है। 'अतुल्य नदी : अतुल्य गाँव' के इस प्रस्तावित नारे के आधार पर भी तीर्थ विकास के बारे विचार करना चाहिए। इसके जरिए नगरवासियों की गाँवों के प्रति समझ भी बढ़ेगी, सम्मान भी और पर्यटन भी। ऐसे गाँव प्रेरक भूमिका में आ जायेंगे। साथ ही उनकी खूबियों का हमारे व्यक्तित्व व नागरिकता विकास में बेहतर ढंग से हो सकेगा। हाँ, ऐसे गाँवों को उनकी खूबियों के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए तैयार रखने की व्यवस्थापरक जिम्मेदारी स्थानीय पंचायतीराज संस्थानों तथा प्रशासन को लेनी ही होगी। पर्यटन, संस्कृति तथा पंचायतीराज विभाग मिलकर ऐसे गाँवों के खूबी विशेष आधारित विकास के लिए विशेष आर्थिक प्रावधान करें तो काम आसान हो जायेगा। इसके बहुआयामी लाभ होंगे।

8. नदी आयोजनों में होटल और बड़ी-बड़ी फैक्टरियों में बनी वस्तुओं से अटे पड़े बाजार की जगह, स्थानीय मानव संसाधन, परिवहन, ग्रामीण आवास, स्थानीय परम्परागत खाद्य व्यंजनों के उपयोग को प्राथमिकता देने की नीति व योजना पर काम करना चाहिए। इसके लिए जहाँ गाँवों को इस तरह के उपयोग से जुड़ी सावधानियों के प्रति प्रशिक्षित करने की जरूरत होगी, वहीं बाहरी पर्यटकों में नैतिकता, अनुशासन, जिज्ञासु व तीर्थाटन भाव का विकास भी जरूरी होगा।

9. कुम्भ अपने मौलिक स्वरूप में सिर्फ स्नान पर्व न होकर, एक मंथन पर्व था। कुम्भ एक ऐसा अवसर होता था, जब ऋषि, अपने शोध, सिद्धान्त व अविष्कारों को धर्म समाज के समक्ष प्रस्तुत करते थे। धर्म समाज उन पर मंथन करता था। समाज हितैषी शोध, सिद्धान्त व अविष्कारों को अपनाने के लिए समाज को प्रेरित व शिक्षित करने का काम धर्मगुरुओं का था। राजसत्ता तथा कल्पवासियों के माध्यम से यह ज्ञान, समाज तक पहुँचता था। समाज अपनी पारिवारिक-सामुदायिक समस्याओं के हल भी कल्पवास के दौरान पाता था। एक कालखण्ड ऐसा भी आया कि जब कुम्भ, समाज की अपनी कलात्मक विधाओं तथा कारीगरी के उत्कर्ष उत्पादों की प्रदर्शनी का अवसर बन गया। कुम्भ को पुनः सामयिक मसलों पर राज-समाज-सन्तों के साझे मंथन तथा वैज्ञानिक खोजों, उत्कर्ष कारीगरी व पारम्परिक कलात्मक विधाओं के प्रदर्शन का अवसर बनाना चाहिए। इससे गाँव-नदी पर्यटन के नजरिए को ज्यादा संजीदा पर्यटक मिलने तो सुनिश्चित होंगे ही कुम्भ, देश-दुनिया को दिशा देने वाला एक ऐसा आयोजन बन जायेगा, जिसमें हर कोई आना चाहे।

10. नदियों के उद्गम से लेकर संगम तक तीर्थ क्षेत्र, पूजास्थली, तपस्थली, वनस्थली, धर्मशाला और अध्ययनशालाओं के रूप में ढांचागत व्यवस्था पहले से मौजूद है। भारत में कितने ही गाँव हैं, जहाँ कितने ही घर, कितनी ही हवेलियां वीरान पड़ी हैं। नदी-गाँव पर्यटन में इनके उपयोग की सम्भावना तलाशना श्रेयस्कर होगा।

11. हाँ, इतनी सावधानी अवश्य रखनी होगी कि नदी-गाँव आधारित कोई भी पर्यटन गतिविधि, उपयोग किए गए संसाधन तथा प्रयोग किए गए तरीके सामाजिक सौहार्द, ग्रामीण खूबियों और पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने वाले न हों। सुनिश्चित करना होगा कि पर्यटन गाँव व नदी संसाधनों की लूट का माध्यम न बनने पाये। गाँव-नदी पर्यटन को नगरीय पर्यटन की तुलना में कम खर्चीला बनाने की व्यवस्थात्मक पहल भी जरूरी होगी।

कहना न होगा कि चाहत चाहे तीर्थाटन की अथवा पर्यटन कीय भारत की नदियों और गाँवों में इनके उद्देश्यों की पूर्ति की सम्भावना अकूत है। इस सम्भावना के विकास का सबसे बड़ा लाभ गाँवों के गाँव तथा नदियों के नदियां बने रहने के रूप में सामने आयेगा। लोग जमीनी हकीकत से रुबरु हो सकेंगे। अपनी जड़ों को जानने की चाहत का विकास होगा। ग्रामीण भारत के प्रति सबसे पहले स्वयं हम भारतवासियों की समझ बेहतर होगी। इससे दूसरे देशों की तुलना में अपने देश को देखने का हमारा नजरिया बदलेगा। दुनिया भी जान सकेगी कि भारत, एक बेहतर सभ्यता और संस्कृति से युद्र देश है। इसी से भारत की विकास नीतियों में गाँव और प्रकृति को बेहतर स्थान दे सकने वाली गलियां कुछ और खुल जाएंगी। नदियों के सुख-दु:ख के साथ जन-जुड़ाव का चुम्बक कुछ और प्रभावी होकर सामने आयेगा। भारत के अलग-अलग भू-सांस्कृतिक इलाकों के लिए स्थानीय विकास के अलग-अलग मॉडल विकसित करने की सूत्रमाला भी इसी रास्ते से हाथ में लगेगी। कितना अच्छा होगा यह सब !!

पर्यटन : एक पारिवारिक-सामाजिक-आर्थिक क्रिया-

पर्यटन, संस्कृत भाषा के मूल शब्द 'अटन' से जुड़कर निकला शब्द है। 'अटन' यानी भ्रमण। पय जमा अटन = पर्यटन यानी आनन्द और ज्ञान की प्राप्ति के लिए भ्रमण। देश जमा अटन = देशाटन यानी देश-विदेश में भ्रमण। तीर्थ जमा अटन = तीर्थाटन यानी तीर्थ क्षेत्रें का भ्रमण। अंग्रेजी भाषा में भ्रमण के लिए 'टूरिज्म' शब्द का प्रयोग किया गया है। 'टूरिज्म' शब्द, मूल रूप से लैटिन भाषा के शब्द 'टोमोस' तथा 'टोमोस' शब्द, यहूदी भाषा के 'तोरह' शब्द से निकला है। 'तोरह' शब्द का एक अर्थ है, शिक्षा की खोज। 'टोमोस' का शाब्दिक अर्थ है, वृत्त अथवा पहिए का घूमना।

पर्यटन की अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि, सिद्धान्त रूप से अपने मूल स्थान से निकलकर किसी भी अन्य देश अथवा स्थान पर 24 घण्टे से अधिक ठहरने वाले को पर्यटक कहती है। यह दृष्टि रक्त-सम्बन्ध , ज्ञान-सांस्कृतिक विनिमेय, साहसिक उद्देश्य, मनोविनोद, चिकित्सा, खोज, समुद्र-दर्शन आदि जैसे उद्देश्यों से की गई यात्रा को पर्यटन की श्रेणी में रखती है। अपने मूल स्थान से दूसरे स्थान पर नौकरी करने, किसी आवासीय विद्यालय में पढ़ने अथवा कहीं स्थायी आवास के लिए की गई यात्रा की श्रेणी में नहीं रखा जाता। पर्यटन की यह दृष्टि व्यापार, वाणिज्य, राजनीतिक परिस्थितियां और धार्मिक आस्था को तीन ऐसी मूल शक्तियां मानती है, जो किसी को पर्यटन हेतु प्रेरित करती है।

गौर कीजिए कि दुनिया में पर्यटन का विकास एकल अथवा पारिवारिक न होकर, सामूहिक क्रिया के रूप में हुआ। द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व पर्यटन के परिणाम चाहे जो रहे हों, लेकिन उसके पश्चात् पर्यटन अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में क्रान्ति का वाहक सिद्ध हुआ। हालांकि पर्यटन में संस्थागत प्रवेश के लक्षण अब सामने आने लगे हैं, लेकिन वास्तव में पर्यटन आज भी एक पारिवारिक-सामाजिक-आर्थिक क्रिया ही अधिक है। पर्यटन, अज्ञान को दूर कर, ज्ञान की नई विधाओं की खिड़कियां खोलता है। पर्यटन, अधयात्मिक विकास के अवसर देता है। पर्यटन, सामाजिक सद्भाव तथा आर्थिक विकास की परिस्थितियां निर्मित करता है। पर्यटन, सांस्कृतिक, शैक्षिक, भौतिक और आर्थिक विनिमेय को सुलभ बनाता है।

यह सुलभता रुढ़ियों से मुक्त होने की प्रेरणा देती हैय धर्म, जाति, रंग, वर्ग और वर्ण विभेद की लकीरों को धुंधला करती है। यह सुलभता, कालखण्ड विशेष की समस्याओं के समाधान सुझाने में भी सहायक सिद्ध होती है।

बड़ा परिवार, मंहगाई, समयाभाव, खराब सेहत, अरुचि, तनाव, सूचना का अभाव, खराब असुविधाजनक परिवहन तंत्र तथा पर्यटन स्थल पर अशान्ति को पर्यटन के विकास में बाधक माना गया है। अशान्ति हो तो इंसान क्या, प्रवासी पक्षी भी उस स्थान पर जाना पसन्द नहीं करते हैं। अवकाश की अधिक अवधि, औद्योगिक विकास, नगरीकरण, अधिक आय, सस्ता परिवहन, शिक्षा में विशिष्टीकरण, सांस्कृतिक अभिरूचि, प्रचार तंत्र तथा राजकीय सहयोग को पर्यटन में सहायक माना गया है। जाहिर है कि यदि पर्यटन का विकास करना हो तो उपरलिखित बाधाओं का निराकरण तथा सहायक पहलुओं का प्रोत्साहन होना ही चाहिए।

बदरीनाथ धाम की यात्रा २७ अप्रैल से

९ मार्च से पूर्णागिरी मेला भी शुरु होगा

आने वाले दिनों में धार्मिक यात्राओं का दौर शुरु हो जाएगा। इसके लिये परम्परागत रूप से तैयारी होने लगी है। बदरीनाथ यात्रा के लिये 27 अप्रैल की तिथि तय हो चुकी है। उस दिन प्रातः 7 बजकर दस मिनट पर श्रद्धालुओं के लिये कपाट खोल दिये जाएंगे। नरेन्द्रनगर स्थित राज दरबार में राजपुरोहितों ने महाराजा मनुजयेन्द्र शाह की जन्म कुण्डली के आधार पर कपाट खोलने की तिथि निकाली। राज महल के आचार्य कृष्ण प्रसाद उनियाल ने वैदिक मंत्रोचार और विधान के साथ पूजन करवाया। स्थानीय सुहागिनों ने महारानी माला राज्य लक्ष्मी शाह के नेतृत्व में 12 अप्रैल को तिलों का तेल निकालेंगी। उधर चतुर्थ केदार रुद्रनाथ के कपाट खुलने की तिथि 20 मई को तय है। 15 मई को गोपीनाथ्ज्ञ मन्दिर से यह प्रक्रिया शुरु हो जाएगी।

पूर्णागिरी क्षेत्र का सुप्रसिद्ध मेला होली के अगले दिन 9 मार्च से शुरु हो जाएगा। इसको लेकर भी अभी से हलचल होने लगी है। इसमें बड़ी संख्या में पूरे देश से श्रद्धालु उमड़ते हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

बसन्त पंचमी एवं शिवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं-

पर्वतीय एजेंसी
मुखानी चौराहा
(निकट पेट्रोल पम्प)
कालाढूंगी रोड
हल्द्वानी
प्रो.संजय पन्त

प्रहलाद सिंह जंगपांगी
ससखेत
थल

ईश्वर सिंह नित्वाल
मल्ला दुम्मर
मुनस्यारी

गौरव पांगती
वस्त्र विक्रेता
मेन बाजार
मुनस्यारी

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारात घर
नानासेम, मुनस्यारी

गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
मुनस्यारी
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल एवं जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
8958525979, 9411134775

सप्ताह के पर्व

माघ शुक्ल पक्ष
1 फरवरी- एकादशी
5 फरवरी- पूर्णिमा
6 फरवरी- प्रतिपदा
11 फरवरी- पंचमी

Hotel Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग,माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

MARTOLIA FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi
Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती
फोन/फैक्सः (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014, 9410713075,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com
पत्र व्यवहार के लिये पते-
जे0के0पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)